एम.एच.डी.

एम. ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2015 और जनवरी 2016 सत्रों के लिए)

अनिवार्य पाठ्यक्रम

एम.एच़.डी.–1 : हिंदी काव्य –1
एम.एच.डी– 5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी–7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

मॉड्यूल 'क' – उपन्यास : विशेष अध्ययन

एम.ए.डी-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी–14 : हिंदी उपन्यास–1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी– 15 : हिंदी उपन्यास –2
एम.एच.डी– 16 : भारतीय उपन्यास

अथवा

मॉड्यूल 'ख' – दलित साहित्य: विशेष अध्ययन

एम.एच.डी–17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य
एम.एच.डी–18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
एम.एच.डी–19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास
एम.एच.डी–20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

इग्नू जन-जन का विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

सत्रीय कार्य 2015-16

पाठ्यक्रम कोड :एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं :

अनिवार्य पाठ्यक्रम

एम.एच़.डी.–1 : हिंदी काव्य –1
एम.एच.डी–5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी–7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

<u>मॉड्यूल 'क' – उपन्यास : विशेष अध्ययन</u>

एम.ए.डी-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी–14 : हिंदी उपन्यास–1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी– 15 : हिंदी उपन्यास –2
एम.एच.डी– 16 : भारतीय उपन्यास

अथवा

<u>मॉड्यूल 'ख' – दलित साहित्य : विशेष अध्ययन</u>

एम.एच.डी–17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य
एम.एच.डी–18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
एम.एच.डी–19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास
एम.एच.डी–20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

एम.एच.डी.-5 पाठ्यक्रम 8 क्रेडिट का है। शेष सभी पाठ्यक्रम 4–4 क्रेडिट के हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए है। प्रत्येक सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थियों को सभी अनिवार्य पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य करने होंगे। लेकिन वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के मॉड्यूल 'क' अथवा मॉड्यूल 'ख' में से किसी एक मॉड्यूल के सभी पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य करने होंगे। आप उसी मॉड्यूल के पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य करें जिस मॉड्यूल का आपने चयन किया है और जिसकी पाठ्य सामग्री आपको प्राप्त हुई है।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए 'विवेचना' नाम से आलोचनात्मक आलेखों के संग्रह भेजे गए हैं। एम.एच.डी.–1 में 'विविधा' नाम पुस्तक भी भेजी गई है। साथ ही एम.एच.डी.–17 से 20 तक चार 'विविधा' और एक 'विवेचना' नामक पुस्तक भी भेजी गई है।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा के सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें। बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि

रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर-पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए, जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

	अनुक्रमांक :..
	नाम : ....
	पता : ....
पाठ्यक्रम शीर्षक :..	....
सत्रीय कार्य कोड :	....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड :	दिनांकः ....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
6. अपनी लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के समन्वयक (coordinator) के पास **जुलाई, 2015 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **31 मार्च 2016** और **जनवरी, 2016 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **30 सितम्बर, 2016** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें:

1. आपकी सत्रांत परीक्षा तीन घंटे की होगी और प्रत्येक सत्रीय कार्य भी तीन घंटे में किए जा सकने की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। इसलिए सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हुए इस बात का ध्यान रखें कि सभी प्रश्नों के उत्तर तीन घंटे में लिखे जा सकें।
2. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें।
3. व्याख्या से संबंधित अंशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
4. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

एम.एच.डी–1
हिंदी काव्य–1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–1/टी.एम.ए/2015–16
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10x4=40

क) पीछे लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
आगे थैं सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि।
दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहुणां, बहुरि न आवौं हट्ट।
कबीर गुरु गरवा मिल्या, रलि गया आटे लूँण।
जाति–पाँति–कुल सब मिटै, नाँव धरौगे कौंण।

ख) सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरूनि चलन रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।।
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत्त मधुप गन मादक मधुहिँ पिए।।
कठुला कंठ बज्र केहरि नख राजत रूचिर हिए।
धन्य सूर एको पल इहिँ सुख का सत कल्प जिए।।

ग) खरभरू देखि बिकल पुर नारीं । सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं।।
तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा।।
देखि महीप सकल सकुचाने । बाज झपट जनु लवा लुकाने।।
गौरि सरीर भूति भल भ्राजा । भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा।।
सीस जटा ससिबदनु सुहावा। रिसबस कछुक अरुन होइ आवा।।

घ) फागु के भीरे अभीरन तें गहि गोबिंद लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्‌माकर ऊपर नाई अबीर की झोरी।
छीन पितंबर कंमर तें सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाइ कह्यो मुसकाइ लला फिरि आइयौ खेलन होरी।

2. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 700–800 शब्दों में दीजिए : 15x3=45

क) विद्यापीठ के काव्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
ख) सूरदास के भ्रमरगीत में सुगण–निर्गुण विवाद को किस प्रकार वर्णित किया गया है? स्पष्ट कीजिए।
ग) घनानंद के काव्य में प्रेम के स्वरूप को सोदाहरण उद्‌घाटित कीजिए।

3. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर लगभग 250 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए : 5x3=15

क) 'पृथ्वीराज रासो' में प्रयुक्त कथानक रूढ़ियाँ
ख) कबीर काव्य की प्रासंगिकता
ग) 'पद्‌मावत' में लोक जीवन

एम.एच.डी.–5
साहित्य सिद्धांत और समालोचना
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–5
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–5/टी.एम.ए./2015–2016
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 700–800 शब्दों में लिखिए : 15x5=75

क) रस का स्वरूप स्पष्ट करते हुए रस सिद्धान्त की शक्ति और सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

ख) अरस्तू द्वारा प्रतिपादित विरेचन सिद्धांत का परिचय दीजिए।

ग) साहित्य के संदर्भ में आधुनिकतावाद और उत्तर आधुनिकतावाद में अंतर स्पष्ट कीजिए।

घ) शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना के विकास पर प्रकाश डालिए।

ङ) काव्य हेतु के रूप में प्रतिभा की विवेचना कीजिए।

2. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर 250–300 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए : 5×25=25

(क) मार्क्सवादी आलोचना
(ख) अभिव्यंजनावाद
(ग) 'आलोचक रामविलास शर्मा
(घ) रीति सिद्धांत
(ङ) ये.एस. इलियट का निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत।

एम.एच.डी.–7 : हिन्दी भाषा और भाषाविज्ञान

सत्रीय कार्य

(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–7
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–7 / टीएमए / 2015–16
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 1000-1000 शब्दों में दीजिए। 15x3=45

1 भाषा संबंधी चॉम्स्की के विचारों का परिचय दीजिए।

2 हिन्दी की स्वर और व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए।

3 भाषा शिक्षण की दृष्टि से विभिन्न भाषाओं का वर्गीकरण कीजिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500-500 शब्दों में दीजिए। 10x4=40

1. फर्दिनांद द सस्युर की भाषा विज्ञान की मूल संकल्पनाओं का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।
2. रूप की संकल्पना स्पष्ट करते हुए उसके प्रकारों का परिचय दीजिए।
3. अनुवाद की प्रकृति, क्षेत्र और उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
4. कोशों के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

(ग) निम्नलिखित पर लगभग 250-250 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए। 5x3=15

1. व्यतिरेकी विश्लेषण
2. स्वनिम विज्ञान
3. हिन्दी-हिंदुस्तानी

मॉड्यूल 'क' – उपन्यास : विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.–13 से 16 तक)

एम.एच.डी.–13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी..13
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–13/टीएमए/2015–16
कुल अंक : 100

नोटः निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. उपन्यास में यथार्थ की अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों का उल्लेख कीजिए। 20

2. उपन्यास विधा की शिल्पगत विशेषताएँ बताइए। 20

3. भारतीय उपन्यासों में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की अभिव्यक्ति पर प्रकाश डालिए। 20

4. हिन्दी के आरंभिक उपन्यासों में नवजागरण की अभिव्यक्ति पर सोदाहरण विचार कीजिए। 20

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10×2=20

   क) यथार्थवाद और प्रकृतवाद

   ख) तीसरी दुनिया के उपन्यास

   ग) प्रेमचंद-पूर्व उपन्यास की आलोचना

   घ) उपन्यास के पात्र

एम.एच.डी.–14
हिन्दी उपन्यास–1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)

सत्रीय कार्य
(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–14
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–14 / टीएमए / 2015–16
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X4=40

(क) विचारों की स्वतंत्रता विद्या, संगीत और अनुभव पर निर्भर होती है। सदन इन सभी गुणों से रहित था। यह उसके जीवन का वह समय था, जब हमको अपने धार्मिक विचारों पर, अपनी सामाजिक रीतियों पर एक अभिमान-सा होता है। हमें उनमें कोई त्रुटि नहीं दिखाई देती, जब हम अपने धर्म के विरुद्ध कोई प्रमाण या दलील सुनने का साहस नहीं कर सकते, तब हममें क्या और क्यों का विकास नहीं होता।

(ख) वास्तव में वह राधा और कृष्ण के प्रेम तत्व को समझने में असमर्थ थी। उसकी भौतिक दृष्टि उस प्रेम के ऐन्द्रिक स्वरूप से आगे न बढ़ सकती थी और उसका हृदय इन प्रेम सुख कल्पनाओं से तृप्त न होता था। वह उन भावों को अनुभव करना चाहती थी। विरह और वियोग, ताप और व्यथा, मान और मनावन, रास और विहार, आमोद और प्रमोद का प्रत्यक्ष स्वरूप देखना चाहती थी। पहले पति-प्रेम उसका सर्वस्व था। नदी अपने पेटे में ही हलकोरें लिया करती थी। अब उसे उस प्रेम का स्वरूप कुछ मिटा हुआ, फीका, विकृत मालूम होता था।

(ग) नीति-चतुर प्राणी अवसर के अनुकूल काम करता है। जहाँ दबना चाहिए, वहाँ दब जाता है; जहाँ गरम होना चाहिए, वहाँ गरम होता है। उसे मानापमान का हर्ष या दुःख नहीं होता। उसकी दृष्टि निरंतर अपने लक्ष्य पर रहती है। वह अविरल गति से, अदम्य उत्साह से उसी ओर बढ़ता है; किन्तु सरल, लज्जाशील, निष्कपट आत्माएँ मेघों के समान होती हैं, जो अनुकूल वायु पाकर पृथ्वी को तृप्त कर देते हैं और प्रतिकूल वायु के वेग से छिन्न भिन्न हो जाते हैं।

(घ) मैंने जज साहब से सारा कच्चा चिट्ठा कह सुनाने का निश्चय कर लिया है। इसी इरादे से इस वक्त चला हूँ। मेरी वजह से इनको इतने कष्ट हुए, इसका मुझे खेद है। मेरी अक्ल पर परदा पड़ा हुआ था। स्वार्थ ने मुझे अंधा कर रक्खा था। प्राणों के मोह ने, कष्टों के भय ने बुद्धि हर ली थी। कोई ग्रह सिर पर सवार था। इनके अनुष्ठानों ने उस ग्रह को शांत कर दिया।

शायद दो-चार साल के लिए सरकार की मेहमानी खानी पड़े। इसका भय नहीं। जीता रहा तो भेंट होगी। नहीं मेरी बुराइयों को माफ करना और मुझे भूल जाना।

2. 'रंगभूमि' पर गांधीवाद के प्रभाव की समीक्षा कीजिए। 12

3. 'सेवासदन' में अभिव्यक्त सामाजिक समस्याओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। 12

4. प्रेमशंकर और ज्ञानशंकर के चरित्रों का तुलनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 12

5. औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से ''गबन'' की विशिष्टताओं का विश्लेषण कीजिए। 12

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिएः 6X2=12

(क) 'गबन' में मध्यवर्ग

(ख) 'सेवासदन' का कथा-शिल्प

(ग) सूरदास का चरित्र

(घ) प्रेमाश्रम में किसान संघर्ष

एम.एच.डी-15
हिंदी उपन्यास-2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी-15
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी-15/टीएमए/2015-16
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः 10X4=40

(क) ''सदा ही ऐसा हुआ है। संत अपने जीवन में गरीबों के होते हैं। मृत्यु के बाद अमीर उन्हें छीन लेते हैं। भगवान बुद्ध भिक्षा-वृत्ति से जीवन बिताते थे। उनके निर्वाण के बाद राजा उनके प्रचारक और प्रतिनिधि बन गये। ईसा के साथ भी यही हुआ। वही इस संत के साथ हो रहा है। कल यह लोग ताजमहल की लागत का एक गाँधी स्मारक बना देंगे और गाँधी जी के सिद्धांतों को उस महल की नींव में दबा देंगे।।''

(ख) दोस्तो-यारो, दिल्ली में अपनी-अपनी प्रीतें-मोहब्बतें धारकर माई हीर को सलाम करो। हीर और राँझा दोनों हमारी इस मुजलिस में शामिल हैं। लोक आख्यान डालते हैं कि जितनी बार इस अलबेले जोड़े के प्रीत-प्यार के दुनिया में गाए जाएँगे, उतनी बार हुस्न के महताब चमकेंगे आशिकों के दिलों में! मशूकों की आँखों में! जितनी बार हीर के दरदीले सुर हवा में लहराएँगे उतनी ही हीर सयालों की, राँझा तख़्त हज़ारे का अपनी रूहों से इन मजलिसों में शामिल होंगे।

(ग) ''हमारी जिन्दगी में जरा-सी पर्त उखाड़कर देखो तो हर तरफ इतनी गन्दगी और कीचड़ छिपा हुआ है कि सचमुच उस पर रोना आता है। लेकिन प्यारे बन्धुओं, मैं तो इतना रो चुका हूँ कि अब आँख में आँसू आता ही नहीं, अतः लाचार होकर हँसना पड़ता है। एक बात और है– जो लोग भावुक होते हैं और सिर्फ रोते हैं, वे रो-धोकर रह जाते हैं, पर जो लोग हँसना सीख लेते हैं वे कभी-कभी हँसते-हँसते उस जिन्दगी को बदल भी डालते हैं।''

(घ) हमारे इतिहास में चाहे युद्धकाल रहा हो, या शन्तिकाल-राजमहलों से लेकर खलिहानों तक गुटबन्दी द्वारा 'मैं' को 'तू' और 'तू' को 'मैं' बनाने की शानदार परम्परा रही है। अंग्रेजी राज में अंग्रेजों को बाहर भगाने के झंझट में कुछ दिनों के लिए हम उसे भूल गये थे। आजादी मिलने के बाद अपनी और परम्पराओं के साथ इसको भी हमने बढ़ावा दिया है। अब हम गुटबन्दी को तू-तू, मैं-मैं, लात-जूता, साहित्य और कला आदि सभी पद्धतियों से आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारी सांस्कृतिक आस्था है। यह वेदान्त को जन्म देनेवाले देश की उपलब्धि है। यही, संक्षेप में, गुटबन्दी का दर्शन, इतिहास और भूगोल है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 12X4=48

(क) जयदेव पुरी की चरित्रगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'जिन्दगीनामा' की भाषा-शैली की विशिष्टता का विवेचन कीजिए।

(ग) 'सूरज का सातवाँ घोड़ा'' में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंधों की विवेचना कीजिए।

(घ) 'राग दरबारी' में निहित व्यंग्य के राजनीतिक और सामाजिक पक्षों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 4X3=12

(क) 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का प्रतिपाद्य

(ख) 'जिन्दगीनामा' में परिवेश चित्रण

(ग) रंगनाथ और रुप्पन की चरित्रगत तुलना

एम.एच.डी.–16
भारतीय उपन्यास
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–16
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–16/टी.एम.ए./2015–2016
कुल अंक : 100

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 800–1000 शब्दों में लिखिए : 15×4=60

1. मछुआरों के जीवन परिवेश को केंद्र में रखते हुए 'चेम्मीन' की कथावस्तु का विश्लेषण कीजिए।
2. संस्कार में लेखक ने पात्रों के चारित्रिक विकास की जिन तकनीकों का प्रयोग किया है उनका उल्लेख करते हुए प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3. 'मानवीनी भवाई' के रचनागत वैशिष्ट्य का मूल्यांकन कीजिए।
4. आदिवासियों के जीवन यथार्थ के संदर्भ में 'जंगल के दावेदार' की प्रासंगिकता रेखांकित कीजिए।

ख) निम्नलिखित पर 400–500 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए : 15×4=40

1. 'चेम्मीन' का शिल्प
2. 'संस्कार' का प्रतिपाद्य
3. महाश्वेता देवी की जीवन–दृष्टि
4. 'मानवीनी भवाई' की नायिका

मॉड्यूल 'ख'– दलित साहित्य : विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.–17 से 20 तक)

एम.ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में 16 क्रेडिट के चार-चार पाठ्यक्रमों के दो मॉड्यूल दिये गये हैं। पहला मॉड्यूल उपन्यास से संबंधित है और दूसरा मॉड्यूल दलित साहित्य से संबंधित दलित साहित्य के मॉड्यूल में निम्नलिखित 4 पाठ्यक्रम शामिल हैं:

एम.एच.डी.–17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य
एम.एच.डी.–18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
एम.एच.डी.–19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास
एम.एच.डी.–20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

जो विद्यार्थी 'उपन्यास' के मॉड्यूल की बजाए दलित साहित्य का मॉड्यूल विकल्प के रूप में लेता है, उसे उपर्युक्त चारों पाठ्यक्रमों का अध्ययन करना होगा। इन पाठ्यक्रमों से संबंधित एक-एक सत्रीय कार्य भी करने होंगे। प्रत्येक सत्रीय कार्य 100 अंक का होगा।

एम.एच.डी.–17
'भारत की चिंतन परंपराएं और दलित साहित्य'

यह पाठ्यक्रम 4 क्रेडिट का है और इसमें कुल 13 इकाइयों का अध्ययन आपको करना है जिनको चार खंडों में विभाजित किया है। यह सैद्धांतिक प्रश्न पत्र है। इसमें दो तरह के प्रश्न पूछे जायेंगे। निबंधात्मक और टिप्पणीपरक। निबंधात्मक प्रश्न लगभग 70–80 अंक के होंगे और टिप्पणीपरक प्रश्न लगभग 20–30 अंक के। सत्रीय कार्य 100 अंक का होगा लेकिन सत्रांत परीक्षा में प्रश्न पत्र 50 अंक का होगा और आपको इसका उत्तर दो घंटे में देना होगा। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए दोनों में अलग-अलग न्यूनतम 40 प्रतिशत अंक हासिल करने होंगे।

स्त्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी.–17/टी.एम. ए/ 2015– 2016
कुल अंकः 100

क) निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 800–1000 शब्दों में लिखिए : 15X4=60

1. अश्वघोष का जीवन परिचय देते हुए उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं की चर्चा कीजिए।
2. मिलिंद-नागसेन संवाद का महत्त्व बताते हुए उसके दार्शनिक पक्ष का विवेचन कीजिए।
3. वीरशैव पंथ की सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं का उल्लेख करते हुए उनकी प्रासंगिकता बताइए।
4. निर्गुण संत काव्य का परिचय देते हुए उसके सामाजिक पक्ष पर प्रकाश डालिए।

ख) निम्नलिखित में से प्रत्येक पर लगभग 500 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 10X4=40

1. संत वेमना
2. महानुभाव पंथ
3. चावकि का मत
4. प्रत्यक्ष प्रमाण के तत्त्व

एम.एच.डी.–18

(दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप)

'दलित साहित्य' मॉड्यूल का पाठ्यक्रम 'दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप' (एम.एच.डी.–18) भी 4 क्रेडिट का है और इसके चार खंडों में 13 इकाइयाँ हैं। यह सैद्धांतिक प्रश्न पत्र है। आपने इस पाठ्यक्रम का अध्ययन कर लिया होगा। अब आपको 100 अंक का सत्रीय कार्य करना है जिसमें दो तरह के प्रश्न पूछे जायेंगे। कुल प्रश्न निबंधात्मक और कुछ टिप्पणीपरक। इस पाठ्यक्रम की सत्रांत परीक्षा 50 अंकों की होगी और उसमें भी निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्न पूछे जायेंगे। सत्रांत परीक्षा की अवधि दो घंटे की होगी। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए दोनों में अलग-अलग 40 प्रतिशत अंक लाने होंगे।

सत्रीय कार्य

(सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–18
सत्रीय कार्य कोड एम.एच.डी.–18/टी एम ए/2015–16
कुल अंक 100

क) निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 800–1000 शब्दों में दीजिए। 15X4=60

1. दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. सामाजिक परिवर्तन में ज्योतिबा फूले के योगदान का महत्त्व रेखांकित कीजिए।
3. डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर के समाज संबंधी चिंतन की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
4. दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्रीय प्रतिमानों पर चर्चा कीजिए।

ख) निम्नलिखित पर 500 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए : 10X4=40

1) दलित आत्मकथाएँ
2) नारायण गुरु के धार्मिक विचार
3) हीरा डोम की कविता
4) प्रेमचंद का दलित संबंधी लेखन

एम.एच.डी–19
हिंदी दलित साहित्य का विकास

एम.ए. (हिन्दी) के दलित साहित्य मॉड्यूल का यह पाठ्यक्रम 19 है, जिसका शीर्षक है : हिन्दी दलित साहित्य का विकास। इस पाठ्यक्रम में आपने हिन्दी के दलित साहित्य का अध्ययन किया है। इस पाठ्यक्रम में कुल चार खंड और 20 इकाइयाँ हैं। पहले खंड में हिन्दी की दलित कविताओं का अध्ययन किया है। दूसरे और तीसरे खंड में दलित कहानियों का और खंड चार में दलित आत्मकथाओं का अध्ययन किया है। यह पाठ्यक्रम भी 4 क्रेडिट का है और सत्रांत परीक्षा में आपको 50 अंक का प्रश्न पत्र करना होगा। इस पाठ्यक्रम से संबंधित एक सत्रीय कार्य करना होगा जो 100 अंक का होगा। सत्रीय कार्य में कविताओं, कहानियों और आत्मकथाओं में से व्याख्याएँ पूछी जाएंगी। कविताओं पर 20 अंक की व्याख्या और कहानियों और आत्मकथाओं पर भी 20 अंक की व्याख्या पूछी जाएंगी यानी आपको कुल 40 अंक की व्याख्याएँ करनी हैं। सत्रीय कार्य में निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्न भी पूछे जाएंगे। निबंधात्मक प्रश्न 40 अंक के और टिप्पणीपरक के 20 अंक के होंगे। इस पाठ्यक्रम का गंभीरतापूर्वक अध्ययन करें और अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

सत्रीय कार्य
(सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–19
सत्रीय कार्यः एम.एच.डी.–19/टीएमए/ 2014–15
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्ही दो की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10X2=20

(क) चाहे संकीर्ण कहो या पूर्वाग्रही
मैं जिस टीस को बरसों बरस
सहता रहा हूँ
अपनी त्वचा पर
सूई की चुभन जैसे,
उसका स्वाद एक बार चखकर देखो
हिल जायेगा पाँव तले जमीन का टुकड़ा।

(ख) दूसरा सच
वह देखना नहीं चाहती
घर से गया हुआ उसका मर्द
अब कभी वापस लौटकर नहीं आएगा
सच यही है।
घर से गए
उसके आदमी की आँतें
किसी रामपुरिया चाकू से कटी–फटी

किसी कूड़े के ढेर के नजदीक पड़ी होंगी।
या उसका झुलसा चेहरा
और जला हुआ शरीर
किसी नहर/नदी/नाले के पास पड़ा होगा
सच यही है।

(ग) यदि धर्मसूत्रों में लिखा होता
तुम ब्राह्मणों, ठाकुरों और वैश्यों के लिए
विद्या, वेद–पाठ और यज्ञ निषिद्ध हैं।
यदि तुम सुन लो वेद का एक भी शब्द
ते कानों में डाल दिया जाय पिघला शीशा।
यदि वेद–विद्या पढ़ने की करो धृष्टता,
तो काट दी जाय तुम्हारी जिह्वा
यदि यज्ञ करने का करो दुस्साहस,
ते छीन ली जाय तुम्हारी धन–सम्पत्ति
या, कत्ल कर दिया जाय तुम्हें उसी स्थान पर।
तब, तुम्हारी निष्ठा क्या होती?

(घ) देवताओं और देशभक्तों के
अर्घ्यों में कारखाने बेचकर
पैदा की गई बेरोजगारी के
यज्ञ को कहते हैं जो 'नई क्रान्ति'
नाशपीटों की यह धोखेबाज सेना
इतना भी नहीं जानती
कि मेरिडियन होटलों की बगल से
गुजरने वाली कोई भी सड़क
'जनपथ' नहीं हो सकती
जनपथ तो उन्हें बनाना है
जिनके हाथ में '50–साला'
आज़ादी के बाद भी
तख्तियाँ दिया जाना शेष है।।

2. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

10X2=20

(क) "तभी तो यह हाय–तोबा मची है। कोई छोटे–बड़े का भेद नहीं। पहले इन ससुरों की परछाई से भी दूर रहा जाता था। अलग खाना, अलग पीना। अब तो छोटे ठाकुर, सुना है शहरा होटलों में एक ही कप में सभी चाय पीवै हैं। कितना बड़ा अन्याय, सारा धरम ही चौपट हो गया।"

(ख) दुसाधों–चमारों के संग रोज़ उठते–बैठते हो, तुम्हारा जूठा बर्तन न धोऊंगी। क्या मिल जाता है वहाँ, अपनी बिरादरी के नहीं हैं क्या? हमसे ज्यादा दिमगर हैं वे? कल को ऐसा होगा कि बिरादरी के लोग नाराज होकर बिरादरी से काट देंगे और पत्तल पानी बंद। दो–दो बेटियाँ हैं वर ढूँढ़ने निकलेंगे तो यही ताना सुनने को मिलेगा कि तुम तो दुसाध–चमार हो गए, उनके साथ उठते–बैठते हो, उनकी बातें करते हो तो ब्याहों उन्हीं के बाल–बच्चों से अपनी बेटियाँ।

(ग) अतिथि-सत्कार का खोखलापन खुल गया था। अतिथि की जाति ही उसे आदर दिलाती है। वैसे भी आदर पाने का हमें अधिकार ही कहाँ थ। सच बोलकर लाठी खाई, बेइज्जती हुई और जाति के नाम पर जो खरोंच मिली उन्हें भरने के लिए युग भी कम पड़ेंगे।

(घ) "बापू रोओ मत, जब तक हीरा की जान में जान है, वह अपनी बहिन की बेइज्ज़ती का बदला लेकर रहेगा।" जमना को बड़ा साहस मिला, वह अपने भाई से बलात्कारियों (सुमेर सिंह और उसके चाचा नत्थू सिंह) की सारी करतूतें बताती है। साथ ही अपने बच निकलने की बात बताती है कि नशे में दोनों बेसुध थे तभी वह भाग पायी, अन्यथा उसका बचना तक मुश्किल था।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिएः 10X4=40

(क) समकालीन दलित कविता के विकास पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'आज का रैदास' कविता के उद्देश्य का उल्लेख करते हुए उसका विवेचन कीजिए।

(ग) 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ' कहानी की रचनागत विशिष्टता बताइए।

(घ) दलित कहानी में अभिव्यक्त सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारों का उल्लेख कीजिए।

(ड़) ''सुमंगली' में दलित मजदूर स्त्री की दारुण कथा चित्रित हुई है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(च) दलित आत्मकथा की विशेषताओं के संदर्भ में 'जूठन' का मूल्यांकन कीजिए।

(छ) 'अपने-अपने पिंजरे' में व्यक्त दलित जीवन की त्रासदी का महत्त्व बताइए।

4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 5X4=20

(क) 'अभिलाषा' कविता का उद्देश्य

(ख) हीरा डोम की कविता का ऐतिहासिक महत्व

(ग) 'आमने–सामने' कहानी की संरचना शिल्प

(घ) दलित आत्मकथाओं की प्रासंगिकता।

एम.एच.डी.–20
भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

एम.ए. हिन्दी दलित साहित्य मॉड्यूल का यह पाठ्यक्रम–20 है जिसका शीर्षक है : 'भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य'। इस पाठ्यक्रम में आपने भारतीय भाषाओं में लिखे गये दलित साहित्य का अध्ययन किया है। इस पाठ्यक्रम में कुल पाँच खंड और 27 इकाइयाँ हैं। पहले खंड में भारतीय दलित कविता, दूसरी और तीसरे खंड में भारतीय दलित कहानियाँ, चौथे खंड में भारतीय दलित आत्मकथाएँ और पाँचवे खंड में भारतीय दलित उपन्यास का अध्ययन किया है। यह पाठ्यक्रम भी चार क्रेडिट का है और सत्रांत परीक्षा में आपको 50 अंक का प्रश्नपत्र करना होगा। इस पाठ्यक्रम से संबंधित एक सत्रीय कार्य करना होगा जो 100 अंक का होगा। सत्रीय कार्य में कविताओं, कहानियों, आत्मकथाओं और उपन्यासों में से व्याख्याएँ पूछी जाएंगी। व्याख्याएँ लगभग 40 अंक की पूछी जाएंगी। 60 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे जो निबंधात्मक और टिप्पणीपरक होंगे। इस पाठ्यक्रम को गंभीरतापूर्वक अध्ययन करें और अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

सत्रीय कार्य
(सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–20
सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–20/टीएमए/2015–16
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित उद्धरणों में से प्रत्येक की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।
10 x 4=40

क) तुझे देखा मैंने
भीड़ भरी सड़क पर टोकरी संभालते
फटे आँचल में खुद को लपेटे
बुरी नजरों को धमकाते
भरे चौक में हाथ में चप्पलें लिए
तुझे देखा मैंने
आँखों में चार दीवारों का सपना लिए
बहुमंजिला इमारतों की सीढ़ियों पर
गर्भ भार को संभाल पैर ढोती

ख) फिर बारी आएगी मेरे पिताजी की.....मेरे भाई की....बहन की, धीरे-धीरे वह पूरे मोहल्ले को कुतर खाएगा और एक दिन पूरे समाज को खत्म कर देगा....। हाँ, मैं उस गिद्ध को अच्छी तरह जानता हूँ.....। वह एक दिन पूरे समाज को खत्म कर देगा......। वह कट्टर दुश्मन है हमारा.....हमारे समाज का.........। वह हमें आगे नहीं आने देना चाहता।

ग) पहले जानवर अक्सर बीमार पड़ जाते थे। इन दिनों डोम (महार-मांग) लोगों की चांदी रहती। जानवर के मरने पर मांस मिलने की उम्मीद होती। डोम गृहणियाँ पाँच-छह टोकरे भरकर सूखा मांस रख लेती। अन्न का दाना नहीं है तो कोई चिंता की बात नहीं। निकला सूखा मांस, डाला बर्तन में, सूखी चर्बी में पकाया। फिर बड़े और बच्चों मोहल्ले में खाते हुए घुमते।

घ) मेरे पूर्वजों ने जिसे खोया है उसी की खोज मैं कर रहा हूँ। मेरी दादी ने मुझे बताया था कि मेरे दादा भी मेरे ही तरह सोचा करते थे। माँ ने बताया पिता भी इसी तरह खोज करते गुजर गए हैं। उसके बाद दादी और माँ सबने अपने को, अपने अस्तित्व को खोजने का प्रयास किया है। मेरे पूर्वजों की धरती में कदम रख पाया हूँ। उनकी जीवन की त्रासदी को जान पाया हूँ।

2. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 700–800 शब्दों में दीजिए। 10X4 =40

क) पठित मराठी कविताओं के आधार पर मराठी दलित काव्य की विशेषताएँ बताइए।
ख) ''उम्मीद अब भी बाकी है'' कहानी के आधार पर दलित स्त्री के संघर्ष को स्पष्ट कीजिए।
ग) 'अक्करमाशी' आत्मकथा के आधार पर लेखक के मानसिक अंतर्द्वन्द्व का चित्रण कीजिए।
घ) 'मशालची' उपन्यास के आधार पर पंजाबी दलित साहित्य में डॉ गुरूचरण सिंह राओ के योगदान पर प्रकाश डाालिए।

3. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए। 5X4 =20

1) 'गौरेया' कविता में व्यक्त स्त्री वेदना,
2) 'अमावस' कहानी की भाषा
3) 'जीवन हमारा' में वर्णित दलित स्त्री का तिहरा शोषण
4) 'अस्पृश्य बसंत' अपन्यास में रामानुजम का चरित्र